

1-इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य-भाग १ QA

अध्याय 1: किंकर्तव्य विमूढता जैसी परिस्थितियाँ

• **प्रश्न 1:** बीसवीं सदी की प्रमुख उपलब्धियाँ क्या थीं और उनके दुरुपयोग से क्या समस्याएँ उत्पन्न हुईं?

◦ **उत्तर:** बीसवीं सदी में विज्ञान और बुद्धिवाद ने असाधारण सुविधाएँ दीं, पर इनके अमर्यादित उपयोग से नई हानियाँ, समस्याएँ और विपत्तियाँ पैदा हुईं। इससे आर्थिक उपनिवेशवाद बढ़ा, युद्ध उकसाए गए, और कुटीर उद्योगों पर निर्भर जनता की रोटी छिन गई, जिससे बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार हो गए।

• **प्रश्न 2:** कारखानों और वाहनों से पर्यावरण पर क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है?

◦ **उत्तर:** कारखाने और द्रुतगामी वाहन लगातार विषैला धुआँ उगलकर वायुमंडल को प्रदूषित कर रहे हैं। प्रदूषण के कारण "ग्रीन हाउस इफेक्ट" से तापमान बढ़ रहा है, बर्फ पिघल रही है, समुद्रों में बाढ़ का खतरा है, और ओजोन कवच भी फट रहा है।

• **प्रश्न 3:** परमाणु ऊर्जा के विकास से कौन सी नई पर्यावरणीय समस्या खड़ी हो गई है?

◦ **उत्तर:** अणु-ऊर्जा के विकास से विकिरण फैलना शुरू हो गया है, और इससे उत्पन्न राख के निपटान की समस्या उत्पन्न हो गई है। जहाँ भी यह राख रखी जाएगी, वहाँ संकट खड़े करेगी। यह एक गंभीर पर्यावरणीय चुनौती है।

अध्याय 2: स्थिति निश्चित ही विस्फोटक

• **प्रश्न 1:** विज्ञान के दुरुपयोग से उत्पन्न 'विस्फोटक स्थिति' का क्या अर्थ है?

◦ **उत्तर:** विज्ञान के दुरुपयोग से उत्पन्न स्थिति में सुखद अंश कम और दुःखद भाग अधिक है, और यह लगातार बढ़ रही है। अब तक जो हानियाँ हुई हैं, उनका समाधान नहीं मिल रहा, और भविष्य में इसके और भी भयानक परिणाम होने की आशंका है।

• **प्रश्न 2:** विज्ञान के 'प्रत्यक्षवाद दर्शन' ने नैतिक मूल्यों को किस प्रकार प्रभावित किया है?

◦ **उत्तर:** विज्ञान का प्रत्यक्षवाद दर्शन केवल वर्तमान लाभ को प्रधानता देता है, जिससे ईश्वर, धर्म, संयम और सदाचार के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। यह मान्यता पशु-प्रवृत्तियों और यौन स्वेच्छाचार को बढ़ावा देती है, तथा अन्य प्राणियों के प्रति निष्ठुरता को सामान्य मानती है।

• **प्रश्न 3:** आधुनिकता, नीति और सदाचार को कैसे प्रभावित कर रही है?

◦ **उत्तर:** आधुनिकता, जो विज्ञान और बुद्धिवाद पर आधारित है और तात्कालिक लाभ के चमत्कारों पर केंद्रित है, नीति और सदाचार का पूरी तरह से उन्मूलन कर रही है। यह मनुष्य को स्वेच्छाचारी बनाती जा रही है, जिससे नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है।

अध्याय 3: बढ़ती आबादी, बढ़ते संकट

• **प्रश्न 1:** अनियंत्रित यौनाचार का जनसंख्या वृद्धि पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

◦ उत्तर: कामुकता को प्राकृतिक मनोरंजन मानने और उन्मुक्त यौनाचार को अपनाने से जनसंख्या वृद्धि की नई विभीषिका खड़ी हो रही है। गर्भ निरोध और भ्रूण हत्याओं के बावजूद जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, जिससे भविष्य में मकान और आहार का गंभीर संकट उत्पन्न होने की आशंका है।

• **प्रश्न 2:** बढ़ती जनसंख्या के कारण पृथ्वी पर कौन-कौन से पर्यावरणीय और सामाजिक संकट उत्पन्न हो रहे हैं?

◦ उत्तर: बढ़ती जनसंख्या के कारण खाद्य उत्पादन के लिए भूमि कम पड़ रही है, जंगल कट रहे हैं जिससे वायु प्रदूषण, बाढ़ें और रेगिस्तान बढ़ रहे हैं, तथा नदियों में पानी का संकट गहरा रहा है। आवास और सड़कों के लिए भी अत्यधिक भूमि की आवश्यकता है।

• **प्रश्न 3:** पृथ्वी की पोषण क्षमता पर जनसंख्या वृद्धि का क्या असर पड़ रहा है?

◦ उत्तर: पृथ्वी पर प्राणियों को निर्वाह देने की क्षमता सीमित है। बढ़ती आबादी के कारण खाद्य उत्पादन के लिए भूमि की कमी हो रही है, जंगलों का कटान बढ़ रहा है, और जलाशय दूषित हो रहे हैं। इससे पृथ्वी की महत्वपूर्ण क्षमता घट रही है और वह असीम प्राणियों को पोषण नहीं दे सकती।

अध्याय 4: हर ओर बेचैनी, व्याधियाँ एवं उद्विग्नता

• **प्रश्न 1:** कोलाहल और प्रदूषण जैसी आधुनिक समस्याओं का मनुष्य की जीवनी शक्ति पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

◦ उत्तर: कोलाहल, प्रदूषण, गंदगी और बीमारियों से घिरा मनुष्य दिनोंदिन अपनी जीवनी शक्ति खोता जा रहा है। इससे उसे शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ जर्जर कर रही हैं। बाहरी सज-धज और विलासिता मनुष्य को आलसी, अपव्ययी और अहंकारी बना रही है, जो एक नया संकट खड़ा कर रहा है।

• **प्रश्न 2:** आधुनिक समृद्धि की दौड़ में मनुष्य क्या खो रहा है और इसका सामाजिक संबंधों पर क्या असर हो रहा है?

◦ उत्तर: समृद्धि बटोरने की बेचैनी में लोग योग्यता और पुरुषार्थ की जगह अनाचार अपना रहे हैं, जिससे तृष्णा बढ़ रही है। इस मानसिकता के कारण मनुष्य अनेक दुर्गुणों से ग्रस्त हो रहा है और पारस्परिक विश्वास तथा स्नेह सद्भाव खो रहा है।

• **प्रश्न 3:** इन शताब्दियों में मनुष्य ने सुविधाओं के बदले में क्या गंवाया है?

◦ उत्तर: इन शताब्दियों में मनुष्य ने सुविधाएँ तो बढ़ाई हैं, पर उसके बदले में जीवनी शक्ति और शालीनता का बुरी तरह क्षरण हुआ है। वह ऐसी स्थिति में रह रहा है जहाँ चिंता, उद्विग्नता और आशंका का माहौल है, और कोई भी संतुष्ट नहीं दीखता।

अध्याय 5: वास्तविकता, जिसे कैसे नकारा जाए?

• प्रश्न 1: युद्ध उद्योगों में संसाधनों के अत्यधिक उपयोग से कौन से गंभीर खतरे उत्पन्न हो रहे हैं?

◦ उत्तर: विश्व के आधे प्रतिभाशाली लोग, पूँजी और चिंतन युद्ध उद्योगों में लगे हैं। यदि परमाणु आयुधों का उपयोग हुआ, तो धरती का महाविनाश हो जाएगा। यदि युद्ध नहीं हुआ, तो उत्पादित युद्ध सामग्री का क्या किया जाए और उसमें लगी जन-शक्ति को रचनात्मक कार्यों में कैसे लगाया जाए, यह एक विकट समस्या होगी।

• प्रश्न 2: मनुष्य का 'उल्टा चिंतन' और 'अनाचारी स्वभाव' वर्तमान स्थिति को कैसे जटिल बना रहा है?

◦ उत्तर: मनुष्य का उल्टा चिंतन, संकीर्ण स्वार्थपरता, आलसी, विलासी और अनाचारी स्वभाव उसे प्रेत-पिशाच स्तर का बना रहा है। इससे जनसमुदाय शारीरिक रूप से रोगी, अभावग्रस्त, चिंतित और असहिष्णु हो गया है, जिससे भविष्य की चिंता हर विचारशील व्यक्ति को किंकर्तव्यविमूढ़ कर रही है।

अध्याय 6: सदुपयोग बन पड़े, तो परिवर्तन सम्भव

• प्रश्न 1: मनुष्य की अनंत शक्तियों का उपयोग करके कैसे असाधारण परिवर्तन किए जा सकते हैं?

◦ उत्तर: मनुष्य अनंत शक्तियों का भंडार है, जिसका अधिकांश भाग प्रसुप्त रहता है। जब उसका उत्साह उभरता है, तो तत्परता, लगन और स्फूर्ति के साथ वह साधारण परिस्थितियों में भी असाधारण कार्य कर सकता है, जिससे आश्चर्यचकित हुआ जा सके।

• प्रश्न 2: पिछली तीन सदियों में 'आत्म जागृति' ने भौतिक प्रगति में क्या भूमिका निभाई?

◦ उत्तर: पिछली तीन सदियों में आत्म जागृति ने, भले ही वह भौतिक प्रयोजनों तक सीमित रही हो, भौतिक प्रगति की दिशा में रुझान बढ़ाया। इससे अन्वेषण हुए, विज्ञान और बुद्धिवाद का विकास हुआ, जिसने प्रत्यक्षवाद के पुराने ढाँचे को नया रूप दिया और जन-जन को प्रभावित किया।

अध्याय 7: सदुपयोग बनाम दुरुपयोग

• प्रश्न 1: किसी उपलब्धि के सदुपयोग और दुरुपयोग में क्या मूलभूत अंतर है?

◦ उत्तर: सदुपयोग से किसी भी वस्तु से अपना और दूसरों का हित साधन किया जा सकता है। इसके

विपरीत, दुरुपयोग से एक माचिस की तीली से पूरा गाँव जल जाने जैसा अनर्थ उत्पन्न होता है। स्वार्थपरता और अदूरदर्शिता के कारण लोग तुरंत लाभ के लिए दुरुपयोग चुनते हैं।

• **प्रश्न 2:** पिछली सदियों में वैज्ञानिक प्रगति का सदुपयोग क्यों नहीं हो पाया और इसका क्या परिणाम हुआ?

◦ उत्तर: पिछली प्रगतिशील शताब्दियों में दूरदर्शिता के अभाव में वैज्ञानिक उपलब्धियों का सदुपयोग नहीं हो पाया। इसके बजाय, उनका ऐसा उपयोग हुआ जिससे आज हर दिशा में संकटों के घटाटोप गहरा रहे हैं। स्वार्थी शासकों और धनाढ्यों को प्राथमिकता मिलने से जनसाधारण का स्तर ऊपर नहीं उठ पाया।

अध्याय 8: सुनियोजन की सही परिणति

• **प्रश्न 1:** यदि विकास योजनाएँ ग्रामोन्मुखी होतीं, तो शहरों और गाँवों पर क्या सकारात्मक प्रभाव पड़ता?

◦ उत्तर: यदि बुद्धिमत्ता बड़े शहरों की जगह ग्रामोन्मुखी योजनाएँ बनाती, तो हर जगह छोटे, स्वावलंबी कस्बे दिखाई पड़ते। इससे न शहरों को गंदगी का भार सहना पड़ता और न गाँवों से प्रतिभा पलायन होता, जिससे वे बेहतर स्थिति में रहते।

• **प्रश्न 2:** युद्धों को अपराध घोषित करने से जनशक्ति और धनशक्ति का उपयोग कैसे बेहतर हो सकता था?

◦ उत्तर: यदि युद्धों को अपराध घोषित कर दिया जाता और आयुध सीमित रखे जाते, तो युद्ध सामग्री बनाने में लगी विशाल धनशक्ति और जनशक्ति शिक्षा, उद्योग, वृक्षारोपण जैसे सृजन कार्यों में लग सकती थी। इससे अद्भुत और असाधारण प्रगति प्राप्त होती।

• **प्रश्न 3:** शिक्षा का सही प्रयोजन क्या होना चाहिए था और इससे बेकारी-गरीबी कैसे दूर हो सकती थी?

◦ उत्तर: शिक्षा का प्रयोजन केवल अफसर या क्लर्क बनना न होकर, उसे जन-जीवन और समाज व्यवस्था के व्यावहारिक समाधानों में प्रयुक्त किया जाना चाहिए था। इससे सभी शिक्षित, सभ्य होते, और बेकारी-गरीबी की शिकायत कहीं न पड़ती, क्योंकि औद्योगिक प्रशिक्षण विद्यालयों से जुड़ा होता।

• **प्रश्न 4:** प्रेस और फिल्म जैसे वैज्ञानिक उपलब्धियों का सदुपयोग जनमानस को कैसे प्रभावित कर सकता था?

◦ उत्तर: यदि प्रेस और फिल्म को केवल उपयोगी और मान्यता प्राप्त विचारधारा को छापने या फिल्माने का अनुशासन होता, तो ये विज्ञान की उपलब्धियाँ मनुष्य की बहुमुखी शिक्षा की आवश्यकता पूरी करतीं। इससे जनसाधारण सुविज्ञ और सुसंस्कृत बन पाता।

अध्याय 9: समाधान इस प्रकार भी सम्भव था

• **प्रश्न 1:** यदि सामाजिक कुरीतियों और वैयक्तिक अनाचारों पर अंकुश लगाया जाता, तो समाज में क्या सकारात्मक बदलाव आते?

◦ उत्तर: यदि सामाजिक कुरीतियों और वैयक्तिक अनाचारों के विरुद्ध बाड़ बनाई जाती, तो बर्बादी में लगी शक्ति सत्प्रयोजनों में नियोजित होती और अपराधों का कहीं दृश्य भी देखने को न मिलता। सभी लोग समानता और एकता का जीवन जीते, और गरीबी भी दृष्टिगोचर न होती।

• प्रश्न 2: नशेबाजी और दुर्व्यसनों पर प्रतिबंध लगाने से व्यक्ति और समाज को क्या लाभ होते?

◦ उत्तर: यदि नशेबाजी-दुर्व्यसनों पर प्रतिबंध होता और पीने वालों को प्रताड़ित किया जाता, तो लोग धीमी आत्म-हत्या से बच जाते। वे शारीरिक और मानसिक दृष्टि से संतुलित रहते, तथा हर प्रकार की बरबादी-बदनामी से बच जाते, जिससे जीवन बेहतर होता।

• प्रश्न 3: आधुनिक 'ठाट-बाट की चकाचौंध' के बावजूद मनुष्य 'खोखला' क्यों हो गया है?

◦ उत्तर: चतुरता के नाम पर मूर्खता अपनाने और अपव्ययों का विरोध न करने से, बाहरी ठाट-बाट के बावजूद मनुष्य भीतर से बेतरह खोखला हो गया है। उसके भीतर और बाहर चिंता, उद्विग्नता और अशांति का माहौल है, क्योंकि मानसिक दरिद्रता विस्तृत वैभव को बेचैनी का कारण बना रही है।

अध्याय 10: निराशा में आशा की झलक

• प्रश्न 1: वर्तमान निराशाजनक परिस्थितियों में भी आशा की किरणें क्यों दिखाई देती हैं?

◦ उत्तर: निराशा में आशा की झलक इसलिए मिलती है, क्योंकि सृजन के प्रयास पूरी तरह बंद नहीं हुए हैं। मनुष्य का हौसला बुलंद हो, तो प्रतिकूलताएँ होते हुए भी मिस्र के पिरामिड या चीन की दीवार जैसे आश्चर्यजनक कार्य किए जा सकते हैं। सामूहिक प्रयास जादू भरे परिणाम दे सकते हैं।

• प्रश्न 2: ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल के 'विक्ट्री' नारे ने कैसे मनोबल बढ़ाया और जापान के उत्थान से क्या सीख मिलती है?

◦ उत्तर: चर्चिल ने द्वितीय विश्व युद्ध में हारते हुए ब्रिटेनवासियों का मनोबल बढ़ाने के लिए "विक्ट्री" (जीतना हमें ही है) का नारा दिया था, जिसने जादुई परिवर्तन किया। जापान ने भी हिरोशिमा की विभीषिका के बावजूद मनोबल नहीं टूटने दिया और आज आर्थिक रूप से सशक्त है। यह दिखाता है कि सही विचारधारा से आस्थाओं को मोड़ा जाए, तो सुखद भविष्य संभव है।

• प्रश्न 3: क्या भविष्य का प्रवाह बदलना संभव है, और कैसे?

◦ उत्तर: हाँ, भविष्य का प्रवाह बदलना संभव है। यदि लोगों की आस्थाओं को युगानुरूप विचार धारा की ओर उचित मोड़ दिया जा सके, तो सुखद भविष्य का प्रादुर्भाव हो सकता है। यह एक भागीरथी कार्य है, पर असंभव नहीं, पूर्णतः संभव है।

अध्याय 11: क्रिया बदलेगी, तो प्रतिक्रिया भी बदलेगी

• **प्रश्न 1:** 'क्रिया की प्रतिक्रिया होना सुनिश्चित है' - इस प्रकृति के नियम को विभिन्न उदाहरणों से स्पष्ट करें।

◦ **उत्तर:** प्रकृति का नियम है कि हर क्रिया की निश्चित प्रतिक्रिया होती है। जैसे विषैले पदार्थ खाने पर उल्टी-दस्त लगते हैं, क्रोधी को प्रतिशोध सहना पड़ता है, और दुर्व्यसनी अपनी सेहत व इज्जत गँवा बैठता है। इसके विपरीत, परिश्रमी और अनुशासित व्यक्ति सफल होते हैं।

• **प्रश्न 2:** सतयुग और कलियुग की परिस्थितियों में क्या अंतर है, और यह आधुनिक युग पर कैसे लागू होता है?

◦ **उत्तर:** सतयुग में लोग साधारण साधनों के साथ भी प्रसन्न और शांत रहते थे। इसके विपरीत, कलियुग में मर्यादाएँ तोड़ने और अनाचारी उपक्रम अपनाने से प्रचुर साधन होते हुए भी लोग डरती-डराती जिंदगी जीते हैं। आज विज्ञान ने शक्ति दी, पर शालीनता के परित्याग से भीतर दुर्गंध भरे विषाणुओं जैसा माहौल बन गया है।

• **प्रश्न 3:** विज्ञान और धर्म के एक साथ चलने से क्या लाभ हो सकते थे?

◦ **उत्तर:** यदि विज्ञान और धर्म मिलकर चले होते, तो आज की उपलब्धियाँ व्यक्ति और समाज के सामने सुख-शान्ति के इतने आधार खड़े कर देतीं, जो सतयुग की तुलना में कहीं अधिक बड़े-चढ़े होते। दुर्भाग्यवश, सदुपयोग और दुरुपयोग की विभाजन रेखा मिट गई है।

अध्याय 12: तेजी से बदलता परोक्ष जगत का प्रवाह

• **प्रश्न 1:** मनुष्य के अनाचार के कारण परोक्ष जगत का प्रवाह कैसे विषाक्त हो चला है?

◦ **उत्तर:** मनुष्य के दुरुपयोग और अनाचार के कारण सूक्ष्म वातावरण भी विषाक्त हो चला है। प्रकृति अपने ऊपर हो रहे बलात्कार का दण्ड दे रही है, जिससे आए दिन दैनिक दुर्भिक्ष, बाढ़, भूकंप, रोग-शोक जैसी घटनाएँ घटित हो रही हैं।

• **प्रश्न 2:** अणु-आयुधों और विषैले रसायनों के प्रहार से पृथ्वी के अस्तित्व पर क्या संकट मंडरा रहा है?

◦ **उत्तर:** अणु-आयुधों, मृत्यु किरणों और विषैले रसायनों के प्रहारों के उपरान्त धरती के निस्तब्ध पिण्ड के रूप में बने रहने पर संदेह है। ऐसा लगता है कि उमड़ने वाले विनाश के बादल महाप्रलय करने जा रहे हैं, और यह सुंदर ग्रह कहीं धूल बनकर अनंत आकाश में छितरा न जाए।

• **प्रश्न 3:** वर्तमान स्थिति को 'विस्फोटक' क्यों कहा गया है और भविष्य के बारे में क्या आशंका व्यक्त की गई है?

◦ **उत्तर:** लक्षणों का पर्यवेक्षण करने वाले देखते हैं कि वर्तमान स्थिति विस्फोटक है, और हम बारूद के ढेर

पर बैठे हैं, निकट भविष्य में महाविनाश के ग्रास बनने जा रहे हैं। विशेषज्ञों और भविष्यवक्ताओं ने 20 वीं सदी के अंत को दुर्दशाओं के बीच बताया है।

अध्याय 13: सन्तुलन नियन्ता की व्यवस्था का एक क्रम

• **प्रश्न 1:** सृष्टि के नियन्ता ने वर्तमान विनाशकारी दौड़ को रोकने के लिए क्या निर्णय लिया है?

◦ **उत्तर:** सृष्टि के नियन्ता ने, जिसने धरती और मनुष्य को बनाया है, विनाश होते देख नहीं सकता। उसने विनाश की अंधी दौड़ को रोककर प्रवाह को संतुलित स्तर पर लाने का सामयिक निश्चय किया है। यह वैसा ही है जैसे अयोग्य शासन के स्थान पर राष्ट्रपति शासन लागू होता है।

• **प्रश्न 2:** अंधकार और अव्यवस्था को सृष्टि व्यवस्था कब तक सहन करती है?

◦ **उत्तर:** सृष्टि व्यवस्था अंधकार की भयानकता और उससे उत्पन्न होने वाली अव्यवस्था को अधिक समय तक सहन नहीं करती। ब्रह्म मुहूर्त आता है, उषाकाल दसों दिशाओं में आलोक भर देता है, और हलचलों का नया माहौल बनता है।

• **प्रश्न 3:** समय की गति में आई तेजी का युग परिवर्तन से क्या संबंध है?

◦ **उत्तर:** मनुष्य की प्रचण्ड पुरुषार्थ परायणता के कारण समय की गति अत्यधिक तेज हो गई है। जो कार्य हजारों वर्षों में नहीं हो पाए थे, वे पिछली थोड़ी सी शताब्दियों में ही हो गए हैं। यह द्रुतगामिता आगे भी जारी रहेगी और सुधार क्रम भी उतनी ही तेजी से होगा।

• **प्रश्न 4:** 'हर बात की एक सीमा होती है' - इस कथन का अनाचार और प्रगतिशीलता से क्या संबंध है?

◦ **उत्तर:** रावण, कंस जैसे अनाचारियों का उदय तेजी से हुआ, पर उनका अंत भी उसी गति से हुआ। जर्जर शरीर मरते हैं और नया जन्म धारण करते हैं। इसी क्रम के अनुसार अवांछनीयताओं का माहौल अब समाप्त होने जा रहा है और उसका स्थान सच्चे अर्थों वाली प्रगतिशीलता ग्रहण करेगी, जैसे लंका दहन के साथ रामराज्य का अवतरण जुड़ा था।

अध्याय 14: इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य

• **प्रश्न 1:** इक्कीसवीं सदी को 'सुखद संभावनाओं की अवधि' क्यों कहा गया है?

◦ **उत्तर:** इक्कीसवीं सदी को सुखद संभावनाओं की अवधि माना गया है, क्योंकि बीसवीं सदी की विभीषिकाओं में अब क्रांतिकारी परिवर्तन होने जा रहा है। यह समय युगसन्धि का है, जिसमें बुझता हुआ दीपक अधिक ऊंची लौ उभारता है, और सृजन के प्रयास पूरे जोर से बाजी जीतने की चेष्टा में जुटे दिखाई पड़ेंगे।

• **प्रश्न 2:** 'युगसन्धि काल' (1989-2000) का क्या महत्व है और इसमें क्या दो प्रकार की हलचलें होंगी?

◦ उत्तर: सन् 1989 से 2000 तक का बारह वर्ष का समय **युगसन्धि काल** माना गया है। इसमें सूक्ष्म और स्थूल परिवर्तनों की **क्रांतिकारी तैयारी** होगी। एक ओर अवांछनीयता हारे जुआरी की तरह दूने दाँव लगाएगी, तो दूसरी ओर **सृजन के दृश्य और प्रयास** भी बाजी जीतने में प्राणपण से जुटे दिखाई पड़ेंगे।

• **प्रश्न 3:** युगसन्धि की ऐतिहासिक बेला में अध्यात्म शक्तियाँ और लोकसेवी क्या भूमिका निभाएंगे?

◦ उत्तर: इस ऐतिहासिक बेला में **अध्यात्म शक्तियाँ** अपने तप-उपचार को गतिशील करेंगी, जिससे भगीरथ जैसे महान परिवर्तनों की भूमिका निभाई जा सके। **लोक सेवियों का एक बड़ा वर्ग** भी कार्य क्षेत्र में उतरकर राम के रीछ-वानरों या गाँधी के सत्याग्रहियों की तरह **एक नए इतिहास की संरचना** करेगा।

अध्याय 15: अदृश्य जगत से सक्रिय परिवर्तन की लहरें

• **प्रश्न 1:** 'दृश्य घटनाएँ' और 'अदृश्य जगत' के बीच क्या संबंध है?

◦ उत्तर: दृश्य घटनाएँ और हलचलें आँखों से दिखाई देती हैं, पर उनका आरम्भ **अदृश्य जगत** से होता है। साँस जैसी अदृश्य आवश्यकता, या ऋतु परिवर्तन, सब अदृश्य रूप से सक्रिय हैं। मनुष्य की भली-बुरी क्रियाएँ भी **अदृश्य वातावरण को प्रभावित करती हैं**, और फिर वहाँ से तदनुरूप परिस्थितियाँ बनती हैं।

• **प्रश्न 2:** विपत्तियों से जूझने और प्रगति के लिए प्रत्यक्ष प्रयासों के साथ-साथ सूक्ष्म अध्यात्म उपचार क्यों आवश्यक हैं?

◦ उत्तर: विपत्तियों से जूझने और प्रगति के लिए केवल प्रत्यक्ष विकास-उन्मुख प्रयास ही नहीं, बल्कि **अध्यात्म उपचारों जैसे सूक्ष्म क्षेत्र के पुरुषार्थ** भी आवश्यक हैं। जैसे स्वाधीनता संग्राम में महर्षि अरविन्द जैसे महापुरुषों ने किया था। पक्षी दोनों पंखों के सहारे उड़ता है, उसी प्रकार **विकास और अध्यात्म दोनों की आवश्यकता है**।

• **प्रश्न 3:** देवताओं की संयुक्त शक्ति से दुर्गा का अवतरण और ऋषियों के रक्त से सीता की उत्पत्ति का उदाहरण क्या दर्शाता है?

◦ उत्तर: ये उदाहरण दर्शाते हैं कि **अदृश्य आधार और सामूहिक अध्यात्मिक पुरुषार्थ** से असाधारण कार्य संपन्न हो सकते हैं। दुर्गा के माध्यम से असुर दमन और सीता के माध्यम से लंका दहन तथा रामराज्य की पृष्ठभूमि बनाने वाले **अदृश्य आधार खड़े किए गए थे**, जो मानवीय शक्ति से परे थे।

अध्याय 16: व्यापक परिवर्तनों से भरा सन्धिकाल

• **प्रश्न 1:** इतिहास में 'विनाश की विभीषिकाएँ' कैसे टली हैं?

◦ उत्तर: सृष्टि के आदि काल से ऐसे कई अवसर आए हैं, जब महाविनाश लगता था कि होकर रहेगा। किन्तु इससे पूर्व ही ऐसी व्यवस्था बनी और साधन उभरे, जिसने गहराते घटाटोप का अंत कर दिया। वृत्रासुर, रावण जैसे असुरों का आतंक भी समय के प्रवाह से अपनी मौत मर गया।

• प्रश्न 2: पिछली एक-दो शताब्दियों में कौन सी सामाजिक कुप्रथाएँ समाप्त हुई हैं और यह क्या दर्शाता है?

◦ उत्तर: पिछली एक-दो शताब्दियों में राजतंत्र से प्रजातंत्र, नारी जाति पर प्रतिबंध, दास प्रथा, जमींदारी, बाल-विवाह, नर-बलि, छुआछूत और जातिवाद जैसी अनेक कुप्रथाएँ समय के प्रवाह से उलटकर सीधी हो गईं। यह दर्शाता है कि परिवर्तन की प्रक्रिया गतिशील रही है और यह गतिचक्र और तेज होने जा रहा है।

• प्रश्न 3: अब बड़े परिवर्तन पहले की तुलना में कम समय में क्यों हो रहे हैं?

◦ उत्तर: पहले जो कार्य पूरे होने और व्यापक बनने में सहस्राब्दियाँ लगती थीं, अब वे दशाब्दियों में पूरे हो जाते हैं। ईसाई धर्म या साम्यवादी विचारधारा का तीव्र प्रसार इसका प्रमाण है। यह सब समय की रफ्तार में परिवर्तन के प्रमाण हैं, जो सूचित करते हैं कि लंबे परिवर्तन चक्र अब छोटे में सिमट रहे हैं।

• प्रश्न 4: मानवी बुद्धिमत्ता ने आधुनिक युग में कौन से चमत्कारी परिवर्तन किए हैं, और भविष्य में इसकी गतिशीलता कैसी रहेगी?

◦ उत्तर: मानवी बुद्धिमत्ता ने विद्युत, टेलीकम्युनिकेशन, लेसर, कम्प्यूटर आदि के माध्यम से धरती पर चमत्कारी परिवर्तन किए हैं। यह अपनी पराकाष्ठा तक पहुँच चुकी है। यह गतिशीलता भविष्य में घटेगी नहीं, बरन् और बढ़ेगी, जिससे रीति-रिवाजों और गतिविधियों में क्रांतिकारी परिवर्तन होंगे।

• प्रश्न 5: 20 वीं और 21 वीं सदी के संधिकाल को क्यों 'विपत्ति भरा' बताया गया है, और इसमें सृजन की संभावनाएँ कैसे दिखती हैं?

◦ उत्तर: भविष्यवक्ताओं और धर्मग्रंथों ने 20 वीं सदी के अंत में प्राकृतिक आपदाओं और मानवीय विग्रहों के चरमोत्कर्ष की चेतावनी दी है। ऐसे में ध्वंस व सृजन, संधिवेला की दो अनिवार्य प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती दिखती हैं, अतः सृजन संभावनाओं को छलावा नहीं मानना चाहिए।

अध्याय 17: युग परिवर्तन का यही समय क्यों?

• प्रश्न 1: 'युग' शब्द का क्या अर्थ है और वर्तमान को 'विज्ञान युग' क्यों कहा गया है?

◦ उत्तर: युग का अर्थ 'जमाना' होता है, जिसकी अपनी विशेषताएँ होती हैं। वर्तमान को 'विज्ञान युग' या 'यांत्रिकी युग' कहा गया है क्योंकि विज्ञान और मशीनों की इसमें प्रमुखता है।

• प्रश्न 2: धर्मग्रंथों की काल गणनाएँ कलियुग की समाप्ति के संबंध में वर्तमान समय से कैसे मेल खाती हैं?

◦ उत्तर: श्रीमद्भागवत और महाभारत जैसे धर्मग्रंथों की युग गणनाएँ, जो सूर्य परिभ्रमण काल को चार देव युगों में (प्रत्येक ४,३२००० वर्ष) विभाजित करती हैं, उनके अनुसार कलियुग की समाप्ति का समय वर्तमान से ठीक-ठाक मेल खाता है।

• प्रश्न 3: 'युगसन्धि काल' के रूप में बारह वर्ष की अवधि का क्या महत्व है, और इसके पीछे वैज्ञानिक व पारंपरिक आधार क्या हैं?

◦ उत्तर: सन् 1989 से 2000 तक के बारह वर्ष को कलियुग की समाप्ति और सतयुग की शुरुआत का 'सन्धि काल' माना गया है। वैज्ञानिक रूप से मनुष्य शरीर की कोशिकाएँ हर बारह वर्ष में बदलती हैं। पारंपरिक रूप से भी ज्योतिष और तपश्चर्या में बारह के अंक का विशेष महत्व है।

• प्रश्न 4: अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के अनुसार, सौर कलंकों के तीव्रतम विस्फोट और उनका पृथ्वी पर क्या प्रभाव पड़ता है?

◦ उत्तर: अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के अनुसार, सौर कलंकों के तीव्रतम विस्फोट हर बारह वर्ष में होते हैं, जिससे विद्युत चुंबकीय तूफान आते हैं। इसका प्रभाव पृथ्वी के जड़-चेतन पर पड़ता है, जिससे नदियों-समुद्रों में उफान, वृक्ष-वनस्पतियों में बदलाव और जनसमुदाय की मनःस्थिति में असंतोष दिखाई पड़ता है।

• प्रश्न 5: सन् 1989-90 में देखे गए असाधारण सौर कलंकों का क्या महत्व था?

◦ उत्तर: खगोल विज्ञानियों का कहना है कि पिछले ढाई सौ वर्षों में सन् 1989-90 में सबसे तीव्रतम सौर कलंक देखे गए। इनसे इतनी प्रचंड ऊर्जा निसृत हुई, जिसने मौसम असंतुलन से लेकर मानसिक विक्षोभ तक की व्यापक भूमिका निभाई। यह अगले वर्षों के असाधारण घटनाक्रमों से भरा-पूरा होने की आशा दिलाता है।

अध्याय 18: अन्तःस्फुरणा बनाम भविष्य बोध

• प्रश्न 1: 'अन्तःस्फुरणा' क्या है और इसका महत्व किस प्रकार समझाया गया है?

◦ उत्तर: अन्तःस्फुरणा मनुष्य के अन्तराल में निहित रहस्यमयी शक्तियों द्वारा मिलने वाली जानकारी है, जिसका कोई प्रत्यक्ष आधार नहीं होता। अग्नि के आविष्कार, सूत कातना, भाषा-लिपि की खोज जैसे अनेक प्रारंभिक उपलब्धियाँ इसी अन्तःस्फुरणा की देन थीं, जो उतनी ही सत्य हैं जितना सूर्य का उदय होना।

• प्रश्न 2: 'इलहाम' और 'भविष्य-ज्ञान' को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कैसे देखा जा रहा है?

◦ उत्तर: धर्मग्रंथों में वर्णित 'इलहाम' को ईश्वरीय वाणी माना गया है, जो पैगंबरों के माध्यम से भविष्य बताती है। अब वैज्ञानिक भी वर्तमान के अध्ययन द्वारा भविष्य बताने वाले "फ्यूचरालॉजी" (भविष्य विज्ञान) को स्वीकारते हैं, जो भविष्यवाणियों का एक अंग है।

• प्रश्न 3: प्रसिद्ध लेखकों और वैज्ञानिकों ने इक्कीसवीं सदी के बारे में क्या संभावनाएँ व्यक्त की हैं?

◦ उत्तर: एच.जी. वेल्स और बी.एफ. स्किनर जैसे लेखकों ने भविष्य की झाँकी प्रस्तुत की है। गुंथर स्टेटस्टेंट, फ्रिटजौफ काप्रा और एल्विन टाफलर जैसे मनीषियों ने इक्कीसवीं सदी के आरम्भ को व्यापक परिवर्तनों का काल और सुख-समृद्धि की संभावना वाला बताया है।

• प्रश्न 4: भविष्य के प्रति 'आशावाद' का मूल आधार क्या है और अदृश्य जगत की हलचलें कैसे सहायक हैं?

◦ उत्तर: भविष्य के प्रति इस आशावाद का मूल आधार मानवी विभूति अन्तःस्फुरण है, जो पूर्वानुमान लगा पाने की दिव्य सामर्थ्य है। परोक्ष जगत में चल रही हलचलें और व्यापक स्तर पर किए जा रहे अदृश्य प्रयास-पुरुषार्थ भी सुखद परिणति की ओर निश्चित रूप से ले जाएंगे, भले ही वे प्रत्यक्ष दिखाई न दें।

अध्याय 19: वैज्ञानिक शोधें भी पूर्वाभास से उपजीं

• प्रश्न 1: न्यूटन को गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की जानकारी किस प्रकार मिली?

◦ उत्तर: न्यूटन जब चिंतन में लीन थे, तब एक सेब के फल का पृथ्वी पर गिरना देखकर उनकी अन्तःप्रज्ञा में हलचल मच गई। इसी घटना ने उन्हें यह सोचने पर मजबूर किया कि पृथ्वी में गुरुत्व बल है, जिससे उन्होंने गुरुत्वाकर्षण शक्ति का सिद्धांत दिया।

• प्रश्न 2: जेम्स वाट और फ्रेडरिक कैकुले के आविष्कारों में 'अन्तर्बोध' की क्या भूमिका थी?

◦ उत्तर: जेम्स वाट को पतीली में उबलते पानी की भाप से उठते ढक्कन ने भाप की शक्ति का सिद्धांत दिया। फ्रेडरिक कैकुले को स्वप्न में अपनी पूँछ काटते साँप की आकृति से बेंजीन न्यूक्लियस की षट्कोणीय संरचना का ज्ञान हुआ। ये दोनों 'अन्तर्बोध' के परिणाम थे।

• प्रश्न 3: अमेरिकी वैज्ञानिक बेंजामिन ऐड्रिनलिन को तड़ित बिजली चालक का आविष्कार कैसे सूझा?

◦ उत्तर: अमेरिकी वैज्ञानिक बेंजामिन ऐड्रिनलिन (फ्रेंकलिन) ने वर्षा भरे तूफान में पतंग उड़ाते समय, गीली डोर से बंधी चाबी से विद्युत स्फुलिंग चमकते देखे। इसी अन्तर्बोध से उनके विकसित चेतना में तड़ित बिजली चालक का आविष्कार उद्भूत हुआ।

• प्रश्न 4: 'दैवी चेतना' ने मानवी प्रज्ञा के माध्यम से कौन से असाधारण कार्य करवाए हैं?

◦ उत्तर: दैवी चेतना ने मानवी प्रज्ञा के माध्यम से मिस्र के पिरामिड, चीन की दीवार, पनामा-स्वेज नहर, ताजमहल जैसे युगान्तरकारी कार्यों को सम्पन्न कराया है। राजनीतिज्ञों, समाज सुधारकों और कलाकारों को भी भावी कार्यों संबंधी प्रेरणा इसी आधार पर मिलती रही है।

• प्रश्न 5: मानवीय पुरुषार्थ 'हर भवितव्यता को बदल सकता है' - इसका क्या अर्थ है?

◦ उत्तर: इसका अर्थ है कि यदि मानवी प्रयास क्रम उलट दिए जाएँ, दिशा बदल ली जाए, और गलतियाँ सुधार ली जाएँ, तो संभावित विपत्तियों के घटाटोप छंट सकते हैं। जैसे तेज आँधी काली घटा को कहीं से कहीं पहुँचा देती है, उसी प्रकार मनुष्य का पुरुषार्थ हर भवितव्यता को बदल सकता है।

अध्याय 20: इक्कीसवीं सदी एवं भविष्यवेत्ताओं के अभिमत

• प्रश्न 1: युग परिवर्तन के संबंध में भविष्यवाणियों के चार मुख्य आधार क्या हैं?

◦ उत्तर: भविष्यवाणियों के चार आधार हैं: १. दिव्य दृष्टि संपन्न व्यक्तियों के वचन, २. ज्योतिष गणनाएँ, ३. धर्मग्रंथों में वर्णित भविष्य कथन, और ४. वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर विभिन्न भविष्य विज्ञानियों द्वारा वैज्ञानिक आकलन। इनमें से अधिकांश भविष्यवाणियाँ सही निकली हैं।

• प्रश्न 2: फ्रांस के विख्यात चिकित्सक नोस्ट्राडेमस कौन थे और उनकी प्रमुख कृति का नाम क्या है?

◦ उत्तर: नोस्ट्राडेमस फ्रांस के प्रख्यात चिकित्सक थे, जिनका जन्म 1503 और मृत्यु 1559 में हुई थी। उनकी 400 भविष्यवाणियों का संकलन "सेंचुरीज" नामक पुस्तक में प्रकाशित हुआ है, जिसमें 15 वीं शताब्दी से 2037 तक की भविष्यवाणियाँ शामिल हैं, और कई सच साबित हुई हैं।

• प्रश्न 3: नोस्ट्राडेमस ने इक्कीसवीं सदी और भारत के संबंध में क्या भविष्यवाणी की थी?

◦ उत्तर: नोस्ट्राडेमस ने बीसवीं सदी के अंत में बुद्धिवाद के चरमोत्कर्ष, प्रकृति से छेड़छाड़ से दैवी प्रकोपों और अंततः एशिया से एक प्रचण्ड शक्ति के प्रादुर्भाव की बात कही थी। उन्होंने लिखा था कि भारतवर्ष से एक विचारधारा निकलेगी जो विश्व को विनाश से बचाएगी।

• प्रश्न 4: महर्षि अरविन्द ने 'अवतार प्रक्रिया' को किस रूप में परिभाषित किया है?

◦ उत्तर: महर्षि अरविन्द के अनुसार, जब उच्छृंखलता अपनी सीमा लाँघ जाती है, तो आत्मबल संपन्न व्यक्तियों में 'सुपरचेतन सत्ता' अवतरित होती है, जिसे सामूहिक चेतना या अवतार प्रक्रिया कहते हैं। यह अब व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि विचारशक्ति के रूप में ('निष्कलंक प्रज्ञावतार') अवतरित होगी।

• प्रश्न 5: स्वामी विवेकानन्द ने 'भारत के भविष्य' के संबंध में क्या भविष्यवाणी की थी?

◦ उत्तर: स्वामी विवेकानन्द ने भविष्यवाणी की थी कि जन-जन तक व्यावहारिक अध्यात्म के सूत्रों को पहुँचाने के लिए मन्दिरों को जनजाग्रति केन्द्रों के रूप में विकसित होते देखा जाएगा। व्यापक स्तर पर संस्कार शिक्षा के केंद्र खुलेंगे, संस्कृत विश्व भाषा बनेगी, और आने वाला युग एकता-समता का होगा।

• प्रश्न 6: अमेरिकी परामनोविज्ञानी श्रीमती जीन डिक्सन ने इक्कीसवीं सदी को किस रूप में वर्णित किया है?

◦ उत्तर: जीन डिक्सन ने इक्कीसवीं सदी को "उज्ज्वल संभावनाओं से भरापूरा" बताया है। उन्होंने कहा कि सन् 2000 तक नीति की विजय होगी, और सन् 2020 तक धरती पर स्वर्ग की कल्पना साकार होने लगेगी,

जहाँ प्रदूषण, बीमारी और भुखमरी नहीं होगी।

• **प्रश्न 7:** जीन डिक्सन के अनुसार, इक्कीसवीं सदी में महिलाओं और भारत की क्या भूमिका रहेगी?

◦ **उत्तर:** जीन डिक्सन ने अपनी कृति "माई लाइफ एंड प्रोफेसीज" में लिखा है कि इक्कीसवीं सदी "नारी प्रधान" होगी, जिसमें महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों का नेतृत्व संभालेंगी। उन्होंने भारत की भूमिका को विश्व शांति स्थापना में विशेष बताया, जहाँ भारत अपने आध्यात्मिक मूल्यों और वैचारिक क्रांति से समतावादी शासन का सूत्रपात करेगा।

अध्याय 21: धर्मग्रन्थों में वर्णित भविष्य कथन

• **प्रश्न 1:** धर्मग्रन्थों के अनुसार, बीसवीं सदी का अंत और इक्कीसवीं सदी का प्रारंभ किस रूप में होगा?

◦ **उत्तर:** धर्मग्रन्थों के अनुसार, बीसवीं सदी का अंत और इक्कीसवीं सदी का प्रारंभ दो युगों की 'सन्धि बेला' के रूप में होगा। वे सभी एकमत हैं कि आगामी युग मनुष्य जाति के उज्ज्वल भविष्य के रूप में सामने आएगा।

• **प्रश्न 2:** श्रीमद्भागवत में कलियुग की विशेषताओं और उसके अंत में क्या परिवर्तन वर्णित हैं?

◦ **उत्तर:** श्रीमद्भागवत के अनुसार, कलियुग में नई-नई बीमारियाँ पनपेंगी, सम्प्रदायवाद बढ़ेगा, और लोग परस्पर असहिष्णु होंगे। अंत में, निष्कलंक सत्ता के अवतरण से सद्भावना और सात्विकता की सर्वत्र अभिवृद्धि होगी, जो सतयुग के आगमन का संकेत है।

• **प्रश्न 3:** ओल्ड टेस्टामेंट में नए युग के आगमन से पूर्व की परिस्थितियों का क्या वर्णन मिलता है?

◦ **उत्तर:** ओल्ड टेस्टामेंट के डैनियल और रेवेलेशन अध्यायों में बीसवीं सदी की समाप्ति से पूर्व प्राकृतिक आपदा और मानवी विग्रहों के चरमोत्कर्ष की चर्चा है। विशेषज्ञों ने इसका समय 1980 से 2000 के बीच बताया है, जिसके बाद स्वर्णिम युग की स्थापना होगी।

• **प्रश्न 4:** इस्लाम धर्म इक्कीसवीं सदी को किस रूप में देखता है?

◦ **उत्तर:** इस्लाम धर्म में चौदहवीं सदी (वर्तमान से मेल खाती) को उथल-पुथल भरा बताया गया है। "कुरआन सार" के अनुसार प्रलय के बाद समस्त पृथ्वी पर प्रकाश छा जाएगा। "इस्लाम भविष्य की आशा" के अनुसार, इक्कीसवीं सदी का प्रारम्भ विज्ञान और धर्म के अद्भुत समन्वय के रूप में होगा, जिससे एकता और समता का राज्य स्थापित होगा।

अध्याय 22: उज्ज्वल भविष्य की संरचना हेतु संकल्पित प्रयास

• **प्रश्न 1:** उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए प्रत्यक्ष प्रयासों के साथ-साथ अदृश्य जगत की भूमिकाएँ क्यों महत्वपूर्ण हैं?

◦ उत्तर: उज्ज्वल भविष्य के लिए राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और संस्थागत प्रयासों के साथ-साथ अदृश्य जगत की भूमिकाएँ भी अतिशय महत्वपूर्ण हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के लिए देव आवाहन और अदृश्य शक्तियों की साक्षी आवश्यक है, जैसे पानी के प्रवाह के साथ तिनकों के बहने के समान।

• **प्रश्न 2:** वर्तमान में अवांछनीय प्रवृत्तियों को हटाकर सत्प्रवृत्तियों को स्थापित करने के लिए किस प्रकार के प्रयासों की आवश्यकता है?

◦ उत्तर: इस दोहरे महान परिवर्तन के लिए जहाँ प्रत्यक्ष पुरुषार्थ की आवश्यकता है, वहीं उसके साथ अदृश्य संकल्प, साहस और दूरदर्शी कौशल भी जुड़ा रहना चाहिए। यह विश्वव्यापी संघर्ष को बिना विलम्ब और असाधारण अवरोधों के संपन्न करने के लिए आवश्यक है।

• **प्रश्न 3:** 'महाकाल की प्रेरणा' और 'मानवी पुरुषार्थ' का युग परिवर्तन में क्या संबंध है?

◦ उत्तर: यह महाकाल की प्रेरणा—ईश्वर की इच्छा—और समय की माँग है, जिसे 'युग-धर्म का पाञ्चजन्य उद्घोषक' भी कह सकते हैं। इसमें प्रचण्ड मानवी पुरुषार्थ उभरेगा, जो नियन्ता की प्रेरणा और सुनिश्चित योजना के पीछे काम कर रहा होगा, जिससे मनुष्य हनुमान या अर्जुन जैसी भूमिकाएँ निभाकर आश्चर्यजनक सफलताएँ प्राप्त करेंगे।

• **प्रश्न 4:** शांतिकुंज में 'युगसन्धि महापुरश्चरण' का क्या महत्व है और इसमें कितने लोग भाग लेंगे?

◦ उत्तर: शांतिकुंज, हरिद्वार में चल रहा 'युगसन्धि महापुरश्चरण' एक अद्भुत सामूहिक साधना का प्रयोग है, जो विशाल ऊर्जा उत्पन्न करेगा। आशा है कि इस सन्धि वेला के बारह वर्षों में प्रायः चौबीस लाख व्यक्ति यहाँ या अपने स्थानों पर पुरश्चरण की प्रक्रिया को कार्यान्वित करेंगे।

• **प्रश्न 5:** शांतिकुंज को 'युग चेतना की गंगोत्री' क्यों कहा गया है?

◦ उत्तर: शांतिकुंज को 'युग चेतना की गंगोत्री' कहा गया है क्योंकि जैसे गंगोत्री से निकलने वाला निर्झर बंगाल तक सहस्र धाराओं में विकसित होता है, वैसे ही शांतिकुंज से शुरू हुई युग साधना का विस्तार देश के कोने-कोने और विश्व के हर भाग में व्यापक होगा।

• **प्रश्न 6:** शांतिकुंज के निर्माण स्थल का चयन क्यों और कैसे किया गया है?

◦ उत्तर: शांतिकुंज का निर्माण स्थल गंगा की गोद, हिमालय की छाया, सप्त ऋषियों की तपोभूमि और दिव्य सान्निध्य जैसे असाधारण संयोगों के कारण चुना गया है। यह सूक्ष्म परीक्षणों के उपरान्त चेतना का उद्गम और युग चेतना की गंगोत्री बनाया गया है।

• **प्रश्न 7:** 'दिव्य चेतना' सामान्य क्षमता वाले लोगों से भी असाधारण कार्य कैसे करवाती है?

◦ उत्तर: जब दिव्य चेतना लोक मंगल के लिए आपातकालीन व्यवस्था बनाती है, तो सामान्य क्षमता सम्पन्नों द्वारा भी असाधारण कार्य होते देखे जाते हैं। युग चेतना के अनुरूप संकल्पित प्रयास करने वालों के साथ व्यक्ति-सामर्थ्य की अदृश्य घटाएँ स्वतः जुड़ जाती हैं, जैसे गीध-गिलहरी या गाँधी के सत्याग्रहियों के साथ हुआ था।

अध्याय 23: विचारक्रान्ति का एक छोटा मॉडल

• **प्रश्न 1:** शांतिकुंज को 'विचार क्रांति का छोटा मॉडल' क्यों कहा गया है?

◦ उत्तर: शांतिकुंज ने इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए स्वयं को 'छोटे मॉडल' के रूप में प्रस्तुत किया है। यह मॉडल दिखाता है कि लगन, श्रद्धा और प्रामाणिकता से सामान्य तंत्र भी उच्चस्तरीय उद्देश्यों को कैसे प्राप्त कर सकता है, जिससे विचार क्रांति की रूपरेखा का व्यावहारिक क्रियान्वयन संभव है।

• **प्रश्न 2:** शांतिकुंज के 'विचार क्रांति' मॉडल में कौन से तीन महत्वपूर्ण प्रयास अनिवार्य रूप से जोड़े गए हैं?

◦ उत्तर: इस मॉडल में तीन महत्वपूर्ण प्रयास जोड़े गए हैं: १. युग चेतना को जनमानस तक पहुँचाने वाली लेखनी, २. जनमानस को झकझोरने वाली परिमार्जित वाणी, और ३. अपनी प्रतिभा व प्रामाणिकता सिद्ध करने वाले पुरोधाओं-अग्रदूतों का परिकर। ये तीनों युग क्रांतियों में सदा अपनी समर्थ भूमिका निभाते रहे हैं।

• **प्रश्न 3:** शांतिकुंज से प्रकाशित होने वाली प्रमुख पत्रिकाएँ कौन सी हैं और उनका उद्देश्य क्या है?

◦ उत्तर: शांतिकुंज से 'अखण्ड ज्योति' (हिन्दी) और 'युग निर्माण योजना' (हिन्दी व अन्य भाषाओं में जैसे 'युग शक्ति' गुजराती) जैसी पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। इनका उद्देश्य अध्यात्म तत्त्वदर्शन, विज्ञान सम्मत प्रतिपादन, परिवार व सामाजिक निर्माण के विचारों को जनमानस तक पहुँचाकर विचार संशोधन करना है।

• **प्रश्न 4:** शांतिकुंज की पत्रिकाएँ बिना विज्ञापन और अर्थ याचना के कैसे इतनी बड़ी ग्राहक संख्या तक पहुँच पाई हैं?

◦ उत्तर: शांतिकुंज की पत्रिकाएँ अपनी उपयोगिता और पाठकों की सहयोगी सद्भावना के सहारे बड़ी हैं। वे बिना विज्ञापन और अर्थ याचना के, मात्र कागज, छपाई एवं डाक खर्च पर 'नो प्रॉफिट, नो लॉस' प्रक्रिया पर चलती हैं, जिससे उनकी ग्राहक संख्या लाखों में पहुँच गई है।

• **प्रश्न 5:** शांतिकुंज द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की क्या विशेषताएँ हैं और वे लोगों तक कैसे पहुँचती हैं?

◦ उत्तर: शांतिकुंज ने ढाई हजार से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जो मानव, परिवार और समाज की समस्याओं पर केंद्रित हैं और कई भाषाओं में अनूदित हैं। इन्हें लागत मूल्य पर बेचा जाता है, और

पाठक 'झोला पुस्तकालय' के माध्यम से सेवा भावना से दूसरों तक पहुँचाते हैं, जिससे कमीशन की उलझन नहीं आती।

• **प्रश्न 6:** शांतिकुंज में 'युग शिल्पी सत्र' और 'संजीवनी विद्या सत्र' का क्या उद्देश्य है और उनसे क्या सिखाया जाता है?

◦ **उत्तर:** शांतिकुंज में वर्ष भर चलने वाले 'युग शिल्पी सत्र' (एक माह) प्रचारक स्तर की योग्यता उत्पन्न करते हैं, जिसमें सुगम संगीत, कथा-प्रवचन, और दीप यज्ञ जैसे प्रभावी जन-जागरण के तरीके सिखाए जाते हैं। 'संजीवनी विद्या सत्र' (नौ दिन) जीवन साधना का ज्ञान देते हैं, जिससे प्रतिभागी कार्यकर्ता क्षेत्र में प्रचारक की भूमिका निभाते हैं।

अध्याय 24: प्रामाणिक तंत्र का विकास

• **प्रश्न 1:** शांतिकुंज में 'प्रामाणिक तंत्र' का विकास कैसे हुआ है और इसके कार्यकर्ता किस प्रकार के हैं?

◦ **उत्तर:** शांतिकुंज में शिक्षकों को शिक्षित करने के लिए उच्च स्तर के व्यक्तित्व और प्रेरणाप्रद वातावरण है। यहाँ प्रायः पाँच सौ ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट स्तर के समर्पित कार्यकर्ता स्थाई रूप से रहते हैं। इनमें से कई ने ऊँची नौकरियाँ छोड़कर सेवाभाव से बारह घंटे काम करते हैं, और कुछ अपनी पूंजी से ही व्यवस्था चलाते हैं।

• **प्रश्न 2:** शांतिकुंज में 'गाँव-गाँव नवयुग का अलख जगाने' के लिए कौन सा तंत्र कार्यरत है?

◦ **उत्तर:** गाँव-गाँव नवयुग का संदेश पहुँचाने के लिए चार संगीतज्ञ और एक वक्ता की पाँच-पाँच की मंडलियाँ निरंतर कार्य क्षेत्र में घूमती रहती हैं। ये मंडलियाँ वर्ष भर में डेढ़ हजार सम्मेलन करती हैं, जिनमें दीप यज्ञ और वार्षिकोत्सव मनाए जाते हैं, जो 3000 से अधिक प्रज्ञा संस्थानों में आयोजित होते हैं।

• **प्रश्न 3:** शांतिकुंज के आयोजनों में सम्मिलित होने की 'दक्षिणा' क्या है और इसका क्या प्रभाव होता है?

◦ **उत्तर:** आयोजनों में सम्मिलित होने की एक ही दक्षिणा है कि एक दुष्प्रवृत्ति को छोड़ा और एक सत्प्रवृत्ति को अपनाया जाए। इस संकल्प के कारण हजारों-लाखों लोगों ने अपनी बुराईयाँ छोड़ी और अच्छाईयाँ ग्रहण की हैं, जिससे उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव आए हैं।

• **प्रश्न 4:** शांतिकुंज से प्रभावित लोग समाज सेवा में किस प्रकार योगदान करते हैं?

◦ **उत्तर:** मिशन से प्रभावित लोग न्यूनतम एक घंटा समय और पचास पैसा अंशदान प्रतिदिन देते रहते हैं। कई लोग अपना आधा समय परिवार और आधा समय समाज सेवा के लिए लगाते हैं, जिससे अवैतनिक और

अनुभवी कार्यकर्ताओं की बड़ी संख्या तैयार हो रही है, जिनमें पचास प्रतिशत से अधिक महिलाएँ हैं।

• **प्रश्न 5:** संत विनोबा भावे के अनुसार किसी संस्था को कब तक जीवित रहना चाहिए, और शांतिकुंज इस सिद्धांत का पालन कैसे करता है?

◦ **उत्तर:** संत विनोबा भावे कहते थे कि किसी संस्था को तभी तक जीवित रहना चाहिए, जब तक जनता उसके कार्यों का मूल्यांकन करके समुचित सहयोग प्रदान करे। शांतिकुंज आरंभ से ही स्वयं को इस कसौटी पर कसने के लिए प्रस्तुत रखा है और स्वेच्छापूर्वक दिए गए सहयोग के आधार पर ही प्रगति कर रहा है।